पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
तीन

पौलुस और इफिसियों

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3
नोट्स 5
I. परिचय (0:28) 5
II. पृष्ठभूमि (2:35) 5
A. लेखक (3:45) 5
B. श्रोता (6:11) 6
1. प्राथमिक श्रोता (6:36) 6
2. द्वितीयक श्रोता (10:23) 7
C. उद्देश्य (18:29) 9
1. परमेश्वर का राज्य (19:37) 9
2. चुनौतियां (27:33) 13
III. संरचना और विषय-वस्तु (34:00) 14
A. अभिवादन (34:52) 14
B. प्रशंसा (35:20) 14
C. प्रार्थना (38:34) 15
D. मुख्य भाग (41:40) 16
1. नागरिकता (42:46) 16
2. प्रबंधन (48:20) 17
3. जीवन की नियमसंहिता (54:00) 18
E. अंतिम अभिनंदन (1:00:50) 21
IV. आधुनिक प्रयोग (1:01:08) 21
A. राजा को सम्मान देना (1:01:47) 21
1. स्तुति और आराधना (1:05:45) 23
2. आज्ञाकारिता (1:07:54) 23
B. राज्य का निर्माण (1:11:23) 24
C. ब्रह्मांड पर विजय पाना (1:22:53) 27
V. उपसंहार (1:28:58) 28
पुनर्समीक्षा के प्रश्न 29
उपयोग के प्रश्न 34

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- इफिसियों की पत्री पढ़ें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:28)

II. पृष्ठभूमि (2:35)

उसकी पत्रियां पासवानी और प्रेमपूर्ण देखभाल करने वाली थीं, और उन्होंने उन समस्याओं के बारे में सीधे बात की जिनका सामना कलीसिया ने पहली सदी में किया था।

A. लेखक (3:45)

अनेक आधुनिक विद्वानों ने तर्क दिया है कि इफिसियों की पत्री पौलुस के किसी विद्यार्थी के द्वारा लिखी गई है, परन्तु पौलुस के लेखक होने को स्वीकार करने के भी कई वैध कारण हैं।

पत्री दर्शाती है कि यह पौलुस के द्वारा लिखी गई थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इफिसियों की पत्री धर्मशिक्षा और भाषाशैली में पौलुस की अन्य पत्रियों से बहुत मिलती है।

प्रेरितों के काम अध्याय 19-21 के अनुसार पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया की स्थापना की थी और वह इफिसुस में दो वर्षों तक रहा था।

B. श्रोता (6:11)

1. प्राथमिक श्रोता (6:36)

पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया को अपने श्रोता के रूप में प्रकट किया।

इफिसुस एशिया के रोमी प्रान्त की राजधानी था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस पत्री के अनेक विवरण खास तौर से इफिसुस से ही संबंधित थे।

आरंभिक कलीसिया के अनेक पूर्वजों ने इस बात की पुष्टि की थी कि पौलुस ने इफिसियों को यह पत्री भेजी थी।

"कलीसिया की सत्य परंपरा यह दर्शाती है कि इस पत्री को लौदीकियों के पास नहीं परन्तु इफिसियों के पास भेजा गया था।" (टरटूलियन, *अगेंस्ट मार्सियन,* पुस्तक 5 अध्याय 17)

2. द्वितीयक श्रोता (10:23)

पहली सदी में कुछ कलीसियाएं लिकुस घाटी में स्थापित हो गईं थीं।

- कुलुस्से
- लौदीकिया
- हियरापुलिस (संभवतया)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

a. अपरिचित श्रोता

पौलुस के बहुत सारे श्रोता ऐसे लोग थे जिनके विश्वास को उसने अपनी आंखों से नहीं देखा था।

उसके पत्र में कोई व्यक्तिगत उल्लेख नहीं पाया जाता।

b. प्रासांगिकता

तुखिकुस ने पौलुस के लिए कम से कम दो पत्र पहुंचाए थे, और शायद तीन :

- एक इफिसुस की कलीसिया को
- एक कुलुस्से की कलीसिया को
- एक लौदीकिया की कलीसिया को (संभवतया)

उसके कारावास के दौरान लिकुस घाटी की कलीसियाएं पौलुस के मन में महत्वपूर्ण स्थान रखती थीं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इफिसियों और कुलुस्सियों की पत्रियां एकसमान समस्याओं को संबोधित करती हैं। अत: इफिसियों की पत्री लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए भी प्रासंगिक और उचित रही होगी।

C. उद्देश्य (18:29)

पौलुस ने भिन्न-भिन्न स्थानों की अनेक कलीसियाओं की समस्याओं का प्रत्युत्तर दिया, जिनमें से अधिकांश से वह मिला भी नहीं था।

1. परमेश्वर का राज्य (19:37)

पौलुस ने अपनी पत्रियों में 16 बार परमेश्वर के राज्य का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया, और उसने प्राय: दूसरे राजकीय शब्दों का भी इस्तेमाल किया।

मसीह का राज्य साझे युगों में पाया जाता है :

- वर्तमान युग — पाप और मृत्यु
- आने वाला युग — परमेश्वर अपनी अंतिम आशीषें और दण्ड उंडेलेगा

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस के प्रचार ने पौलुस की प्रैरितिक सेवकाई के मुख्य भाग की रचना की।

सुसमाचार का क्षेत्र सार्वभौमिक है। हमारा स्वर्गीय राजा अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग कर रहा है :,

- अपने शत्रुओं को अधीन करने और पाप पर विजय पाने में
- अपने लोगों को उनके दासत्व से छुड़ाने में
- अपने लोगों को नई पृथ्वी पर शासकों के रूप में उन्हें नियुक्त करने में

पौलुस ने इफिसियों को सुसमाचार का विशाल चित्र प्रदान करने के लिए परमेश्वर के राज्य की प्रकृति के बारे में निर्देश दिए।

a. नागरिकता, 2:12, 19

पुराने नियम में परमेश्वर के लोग राज्य या इस्राएल के राज्य के रूप में संगठित होते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस के दिनों में सबसे कीमती और प्रसिद्ध नागरिकता रोमी साम्राज्य की थी।

b. उत्तराधिकार, 1:14, 18; 5:5

उत्तराधिकार के अधिकार केवल उन्हीं नागरिकों के लिए उपलब्ध थे जो राज्य के नागरिक थे। और वास्तव में पौलुस ने मसीह के राज्य के साथ स्पष्ट रूप से हमारा संबंध जोड़ा।

c. सैन्य सेवा, 6:10-18

युद्ध राज्यों के भीतर सबसे प्रत्यक्ष रूप से जीवन की वास्तविकता से जुड़ा हुआ था।

पौलुस का यह बल देना कि मसीही आत्मिक युद्ध में लगें, इसमें परमेश्वर के राज्य की नागरिकता का अर्थ भी निहित है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

d. सृष्टि पर अधिकार, 1:20–2:6

सृष्टि पर अधिकार परमेश्वर के राज्य से संबंधित है।

e. नामों के स्रोत, 3:15

पुराने नियम में, परमेश्वर के लोगों को उसके नाम से बुलाया जाता था क्योंकि वे उसके राज्य का हिस्सा थे।

यह उनके लिए सामान्य था जिन्हें साम्राज्य में नागरिकता प्रदान की गई है कि वे अपने प्रायोजक या सम्राट का नाम लें।

f. परमेश्वर के दूत, 6:20

पुराने नियम और रोमी परिपेक्ष्य में दूत राजा या सम्राट का आधिकारिक प्रतिनिधि होता था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. चुनौतियां (27:33)

a. पापमय स्वभाव

परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के चरित्र में पाप नहीं पाया जाना चाहिए।

b. जातिगत विवाद

पौलुस ने कलीसिया में यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच जातिगत विवादों के विषय को संबोधित करने के लिए परमेश्वर के राज्य के रूपक का प्रयोग किया।

पौलुस ने नागरिकता और वाचाओं के रूप में कलीसिया की चर्चा की।

c. दुष्टात्माओं की शक्तियां

दुष्टात्माओं के पास “आकाश का राज्य” है जिन पर शैतान के द्वारा अधिकार किया जाता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कलीसिया —परमेश्वर का राज्य— अंधकार के राज्य से, जिस पर शैतान और उसकी दुष्टात्माएं शासन करती हैं, आकाशीय युद्ध में लगी हुई है।

III. संरचना और विषय-वस्तु (34:00)

A. अभिवादन (34:52)

अभिवादन कहता है कि पत्री प्रेरित पौलुस की ओर से है, और यह भी दर्शाता है कि उसकी प्रेरिताई परमेश्वर की इच्छा से है।

B. प्रशंसा (35:20)

यह पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस की पत्रियों में से एकमात्र पत्री है जिसमें अभिवादन के बाद परमेश्वर की प्रशंसा का भाग आता है।

प्राचीन राजा अपनी प्रजा के लिए भलाइयां करते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने मसीह में हमारे उत्तराधिकार के लिए परमेश्वर की प्रशंसा की।

C. प्रार्थना (38:34)

परमेश्वर का राज्य पौलुस की प्रार्थना के लिए एक सन्दर्भ को प्रदान करता है।

पौलुस ने परमेश्वर की सर्वोच्चता का उल्लेख किया जब उसने :

- पिता की “अतुल्य सामर्थ” और “अपार शक्ति” के बारे में बात की
- अन्य शासकों के ऊपर मसीह को बैठाए जाने की बात की

मसीह अपने उत्तराधिकार को हमारे साथ बांटता है जिससे उसका उत्तराधिकार हमारा उत्तराधिकार भी बन जाता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

D. मुख्य भाग (41:40)

यह भाग एक ओर परमेश्वर के धर्मी राज्य और दूसरी ओर दुष्टात्माओं एवं पापी मनुष्यों के पापमय राज्य के बीच विपरीतता पर केन्द्रित है।

1. नागरिकता (42:46)

a. अंधकार का राज्य

मानवजाति पापमय और पतित है।

b. ज्योति का राज्य

परमेश्वर ने पहले से लोगों को छुड़ाने के लिए निर्धारित किया है ताकि वे उद्धार प्राप्त करें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

c. नागरिकता की प्रकृति

परमेश्वर ने अपने सर्वोच्च शासन में यहूदियों और गैरयहूदियों को एक राज्य में लाने वाले पुराने नियम के आदर्श को पूरा किया है।

2. प्रबंधन (48:20)

यरुशलेम में उसकी गिरफ्तारी से पूर्व पौलुस ने इफिसियों के प्राचीनों को चेतावनी दी थी कि झूठे शिक्षक उनके ही स्थानों से उठ खड़े होंगे।

पौलुस ने प्राचीनों को इन झूठे शिक्षकों से चौकसी रखने के निर्देश दिए।

पौलुस के दिनों में परमेश्वर प्रेरित के कार्यभार के द्वारा अपने राज्य का संचालन करता था। उस कार्यभार का अस्तित्व आज नहीं है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रेरितों को परमेश्वर के अधिकार के साथ भरा गया था और वे प्राचीनों के साथ-साथ पूर्ण कलीसिया के अधिकार रखते थे।

प्रेरितों को :

- परमेश्वर की ओर से विशेष अनुग्रह प्रदान था जो उनको उनकी सेवकाई में सामर्थ देता था
- परमेश्वर की ओर से विशेष प्रकाशन भी प्राप्त था जिसने उन्हें त्रुटिरहित सत्य सिखाया था

पौलुस ने परमेश्वर के लोगों को सच्चाई की ओर प्रेरित करने के लिए उनसे परमेश्वर के वचन बोले।

3. जीवन की नियमसंहिता (54:00)

a. राज्य में कलीसियाई संगठन, 4:1-16

जब हरेक व्यक्ति दिए गए अपने कार्यों को पूरा करता है तो यह मसीह को लाभ पहुंचाता है। और क्योंकि यह मसीह को लाभ पहुंचाता है इसलिए यह पूरे राज्य को लाभ पहुंचाता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने प्रभु को युद्धभुमि से लौटते हुए जयवंत राजा के रूप में चित्रित किया।

मसीह ने अपने वरदानों को इस प्रकार से वितरित किया है कि वे राज्य के नागरिकों को परस्पर सेवा करने के योग्य बनाते हैं।

b. राज्य को शुद्ध करना, 4:17–5:20

भ्रष्टाचार ज्योति के राज्य में भी रह जाता है।

ज्योति के राज्य के भीतर रहने वाले विश्वासियों में नया स्वभाव भी पाया जाता है जिस पर वे पाप पर विजय पाने के लिए निर्भर हो सकते हैं।

परमेश्वर का राज्य जितना संभव हो सके उतना शुद्ध होना चाहिए; इसे अपने राजा के चरित्र को दर्शाना चाहिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

c. राज्य में पारिवारिक संगठन, 5:21–6:9

अधिकार का एक सही संबंध मसीह के राज्य के सभी स्तरों में बना रहना चाहिए।

प्रत्येक को उनका सम्मान व आदर करना चाहिए जो कलीसिया में अगुवाई, प्रभाव और अधिकार के पदों पर पाए जाते हैं।

उसने पदों पर रहने वालों को सिखाया कि वे सबके लाभ के लिए कार्य करें।

d. राज्य के बीच युद्ध, 6:10-20

ज्योति के राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की सेना में अंधकार के राज्य के विरुद्ध आत्मिक युद्ध लड़ने की सेवा करने के लिए बुलाया गया है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यह निश्चित करने के लिए कि हम हमारे शत्रुओं के विरुद्ध खड़े रह सकें वह अपने शस्त्रों से हमें सुसज्जित करता है और अपने वचन से हमें भरता है।

E. अंतिम अभिनंदन (1:00:50)

पौलुस ने अंतिम आशीषें दी और यह दर्शाया कि तुखिकुस यह पत्री पहुंचाएगा।

IV. आधुनिक प्रयोग (1:01:08)

A. राजा को सम्मान देना (1:01:47)

हमारे स्वर्गीय राजा ने हमारे लिए बहुत से ऐसे कार्य किए हैं जिनका प्रत्युत्तर हमें उसको सम्मान देकर करना चाहिए, विशेषकर इनके साथ :

- धन्यवाद
- आज्ञाकारिता
- वफादारी

परमेश्वर अपना प्रेम प्रदर्शित करता है, जब वह :

- हमें नया जन्म प्रदान करता है
- अपने राज्य में हमें लेकर आता है
- अधिकार और सम्मान की स्थिति में हमें रखता है
- हमें हमारा उत्तराधिकार प्रदान करता है

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रेम — विश्वासयोग्यता और भक्ति; इसकी अभिव्यक्ति मुख्यत: की जाती है :

- राजा की ओर से भलाई और सुरक्षा के द्वारा
- उसके अधीन लोगों की ओर से आज्ञाकारिता और वफादारी के द्वारा

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का वर्णन उसकी दया और सुरक्षा में प्रदर्शित किया जाता है, जैसा कि उसने इन बातों में व्यक्त किया है :

- पूर्वनिर्धारण
- हमारे लिए मसीह की मृत्यु
- हमारी आत्माओं के नए जन्म
- परमेश्वर के राज्य में हमारी नागरिकता
- स्वर्गीय राजा मसीह के साथ हमारे संयोजन
- हमें भविष्य में मिलने वाली महिमा

पौलुस ने परमेश्वर को महिमा देते हुए स्तुतिगान के द्वारा परमेश्वर को सम्मान दिया।

पौलुस ने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे योग्य जीवन जीने के द्वारा अपनी आज्ञाकारिता से परमेश्वर को सम्मान दें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. स्तुति और आराधना (1:05:45)

हमें हमारे आभार को इनमें व्यक्त करना चाहिए :

- भजनों
- गीतों
- आत्मिक गान
- ह्रदय के संगीत

पौलुस ने हमारे लिए स्तुति करने के अनेक नमूने शामिल किए हैं, जैसे :

- इफिसियों 1:3-14 में उसकी प्रशंसा
- इफिसियों 3:14-21 में उसकी स्तुतिरूपी प्रार्थना

2. आज्ञाकारिता (1:07:54)

पौलुस ने हमें हमारे स्वर्गीय राजा को सम्मान देने के रूप में उसकी आज्ञा मानने की शिक्षा भी दी है।

प्रभु के प्रति हमारा प्रेम होना चाहिए :

- अविनाशी
- कभी न समाप्त होने वाला
- निरन्तर
- भक्तिपूर्ण
- दृढ़

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने मसीह में हमारी नई रचना की है ताकि हम उसके द्वारा हमारे लिए दिए गए भले कार्यों को करते हुए उसके राज्य में फलदायी नागरिक बन जाएं।

B. राज्य का निर्माण (1:11:23)

परमेश्वर चाहता है कि हम पृथ्वी पर उसके राज्य का विस्तार करने और उसे बढ़ाने में उसकी सहायता करें।

परमेश्वर का राज्य भवन है जिसकी संरचना में प्रत्येक मसीही एक पत्थर है।

इस भवन का लक्ष्य परमेश्वर का निवासस्थान बनना था ताकि परमेश्वर अपने लोगों में वास करे।

जब पौलुस ने सिखाया कि यहूदी और गैरयहूदी उसके मन्दिर के रूप में परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे, तो उसका अर्थ था कि परमेश्वर का राज्य अपने परम लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

बड़ा चित्र :

- परमेश्वर को सम्मान देना
- उसकी उपस्थिति में रहना
- स्वयं की अपेक्षा मसीह की महिमा को बढ़ाने का प्रयास करना

हमें नम्र बनना आवश्यक है — कोई विश्वासी किसी दूसरे से बढ़कर आशीषों को पाने के योग्य नहीं है।

हमें उन क्रियाओं से पश्चाताप करना चाहिए जिनके द्वारा हम :

- एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं
- दूसरों को नुकसान पहुंचाकर स्वयं ऊपर चढ़ जाते हैं

हमें परमेश्वर के राज्य में सभी विश्वासियों को हमारे समान रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

जो रूपक पौलुस ने इफिसियों की पत्री में राज्य के निर्माण को स्पष्ट करने के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया, वह था देह का :

- जिसका सिर मसीह है
- सभी विश्वासी एकसाथ मिलकर मसीह की देह का निर्माण करते है

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मन्दिर के रूपक के समान, देह के रूपक ने भी परमेश्वर के राज्य का वर्णन किया :

- मसीह स्वर्ग में राजा के समान बैठा है
- वह अपने लोगों, अर्थात कलीसिया के लाभ के लिए शासन कर रहा है

मसीह की देह रूपक का पौलुस द्वारा संपूर्ण इस्तेमाल 4:1-16 में ही प्रकट होता है जहां उसने राज्य में कलीसियाई संगठन का तर्क दिया है।

परमेश्वर ने कलीसिया में अगुवों को स्थापित किया है जिनका कार्य है कि वे हमें एकदूसरे के प्रति सेवा करने के लिए तैयार करें।

इन अगुवों को दो लक्ष्यों की ओर कलीसिया की अगुवाई करनी है :

- विश्वास में एकता
- मसीह की पूर्णता के संपूर्ण भाग को प्राप्त करना — सारी सृष्टि को मसीह के शासन में लेकर आना

अगुवे की शिक्षाओं और कलीसिया के सेवा के कार्य दोनों के चरित्र में प्रेम का होना अनिवार्य है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे पड़ोसियों के प्रति हमारा प्रेम :

- व्यक्तिगत संबंध की भावना ही नहीं है
- वफादारीपूर्ण समर्पण है जो उनकी भलाई चाहता है

C. ब्रह्मांड पर विजय पाना (1:22:53)

परमेश्वर का राज्य इस समय पाप और मृत्यु के वर्तमान युग के साथ-साथ पाया जाता है। परमेश्वर की शक्तियां दुष्टात्माओं और पाप में गिरी मानवजाति के राज्य के विरुद्ध युद्ध करती हैं।

मसीह के साथ हमारे संबंध के कारण दुष्टात्माओं की शक्तियों के विरुद्ध लड़ाई में हमारा पलड़ा भारी है।

कलीसिया का अस्तित्व ही परमेश्वर के सभी शत्रुओं के नाश की साक्षी देता है।

मनुष्यजाति की सृष्टि से पहले ही परमेश्वर ने दुष्ट शत्रुओं के समक्ष अपनी महिमा को प्रकट करने के लिए अपनी कलीसिया का इस्तेमाल करने की योजना बनाई थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और हमें महत्व देता है। और सब बातों का अपने से मेल करवाने, और ब्राह्मांड को नया बनाने और उसे शुद्ध करने की क्रिया में, वह हमसे आरंभ कर रहा है।

परमेश्वर के राज्य के आरंभ होने के प्रमाण :

- कलीसिया का अस्तित्व
- कलीसिया की क्षमा
- कलीसिया का शुद्धिकरण

V. उपसंहार (1:28:58)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. हमें यह क्यों विश्वास करना चाहिए कि पौलुस ने इफिसियों की पत्री लिखी है?

2. पौलुस ने इफिसियों को पत्री क्यों लिखी?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किन रूपों में इफिसियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि को जानना उसकी पत्री को बेहतर रीति से समझने में आपकी सहायता कर सकता है?

4. प्रशंसा और प्रार्थना के विषय में पौलुस की शिक्षा किस प्रकार पत्री की संपूर्ण संरचना के भीतर कार्य करती है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. इफिसियों की पत्री में परमेश्वर के राज्य के भीतर नागरिकता, प्रबंधन, और जीवन जीने के नियमों के विषय में पौलुस की शिक्षा का वर्णन कीजिए।

6. मसीहियों को हमारे स्वर्गीय राजा का सम्मान क्यों और कैसे करना चाहिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. मसीहियों को स्वर्ग के राज्य के निर्माण के लिए कार्य क्यों करना चाहिए?

8. इस युग और आने वाले युग के विषय में पौलुस की शिक्षा का वर्णन कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. हमारे राजा मसीह से मिलने वाली आशिषों के प्रति हम मसीहियों को किस प्रकार प्रत्युत्तर देना चाहिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. परमेश्वर के राज्य के नागरिक होने से कौनसी आशीषें और लाभ प्राप्त होते हैं?

2. सुसमाचार के प्रति आपकी समझ किस प्रकार परमेश्वर के राज्य के विषय में पौलुस की शिक्षा के साथ उपयुक्त बैठती है?

3. परमेश्वर के राज्य के विषय में पौलुस की शिक्षा किस प्रकार अन्य संस्कृतियों या जातिगत पृष्ठभूमियों के मसीहियों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल सकती है?

4. डॉ. किड ने कहा "मसीह में, प्रत्येक विश्वासी को ऐसे माना जाता है जैसे कि वह स्वयं यीशु हो।" आपके मसीही जीवन में आपके लिए इसके क्या व्यावहारिक अर्थ हो सकते हैं?

5. परमेश्वर के राज्य के भीतर पाए जाने वाले दूसरे लोगों के साथ हमारी बातचीत किस प्रकार उनके साथ हमारी बातचीत से अलग होती है जो अंधकार के राज्य में पाए जाते हैं?

6. इफिसियों की पत्री में पौलुस की शिक्षा के प्रकाश में ऐसी कौनसी व्यावहारिक बातें हैं जो आप नैतिक शुद्धता को और अधिक प्रभावशाली तरीके से प्राप्त करने में प्रयोग कर सकते हैं?

7. किस प्रकार एक राजा का अपनी प्रजा से संबंध, विश्वासियों के साथ परमेश्वर के संबंध के समान है?

8. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org